भजन

तर्ज–मुझे तेरी मुहब्बत का सहारा मिल

कहीं ऐसा न हो यह वक्त भी यूं ही गुजर जाए
धनी के सामने होना कहीं मुश्किल न हो जाए

1– अर्श रूहें यहां आईं,धनी का सूत कातन को
नजर जाहेरी में उलझी हैं,छोड़ सुख अर्श बातन को
लगन पिया मिलन वाली,भरम में न बदल जाए

2– जो बिन काते उठेगी वोह,झुकी आंखों से बैठेगी
सभी रूहों में शर्मिन्दा,दुबारा दिन ये चाहेगी
मगर ऐसा नहीं होगा,कि ये दिन फिर से मिल जाए

3– किसी का कातना बेहतर, सम्भाली हाथ में पूनी
कोई जागा करे रातों,धनी से प्रीत दूनी
पिया बिन कुछ नहीं अपना,यकीं ऐसा अटल आए

4–वो जिसने देके दिल अपने,सुहाग का सूत काता है
नजर लाहूत में उसकी,वहीं सुरता को बांधा है
वो मन भायेगी दूल्हा के,जो रहनी में बदल जाए